गाँधीवाद और प्रेमचंद के उपन्यास

डॉ. संध्या गर्ग,

एसोसिएट प्रोफेसर,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रत्येक युग का साहित्य अपने युगीन जीवनबोध की अभिव्यक्ति करता है वह उससे सम्पृक्त होता है या कहें कि उससे इतर साहित्य हो ही नहीं सकता। समाज की अच्छाईयाँ, बुराईयाँ, आदर्श, संघर्ष सभी कुछ तो साहित्य में स्थान पाता है। साहित्यकार वर्तमान की रचना कर भविष्य के लिए आशा और संदेश पाठक को देता है। युग की घटनाओं के अतिरिक्त प्रत्येक युग में कोई ऐसा व्यक्तित्व भी रहा है जिसने युग की सोच बदल दी है। जिसकी सोच को युग ने अपना जीवनदर्शन, समाज दर्शन बढ़ लिया है। राम, कृष्ण, बु(, महावीर, कबीर, दयानंद सरस्वती, विवेकानन्द ऐसे महापुरूष हुए जिन्होंने समाज का स्वरूप बदला, समाज को एक नयी दृष्टि दी– धर्म के प्रति, समाज के प्रति, स्त्राी के प्रति, ईश्वर के प्रति और समाज की चली आ रही परंपराओं और रूढ़ियों के प्रति भी।

भारतीय इतिहास के कालखंड में सन् 1920 से 1940 तक का समय गाँधी युग रहा है। एक लंबे समय से ब्रिटिश साम्राज्य के विरू(लड़ते भारतीय जनमानस को गाँधी के रूप में ऐसा मार्ग दृष्टा मिला जो उनके हारते साहस और आत्मबल को पुर्नजीवितकर रहा था। सत्य और अहिंसा इन दोनो सि(ांतों को लेकर उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा ही बदल दी और जो साम्राज्य 70 वर्षों के संघर्ष से नहीं घबराया था वह असहयोग और सत्याग्रह जैसे अहिंसात्मक साध्नों से घबराकर अपने दिन गिनने के लिए विवश हो गया। निश्चित रूप से गाँधी ने जनमानस के साथ–साथ उस समय के साहित्य को भी प्रभावित किया। गाँधी लहर के प्रभाव में, पंत की रचनाएँ, मैथिलीशरण गुप्त का साकेत, दिनकर की रश्मिरथी, प्रसाद का शेरसिंह का शस्त्रा समर्पण, निराला की प्रारंभिक रचनाएँ तो हैं ही उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद को हम गाँधी दर्शन का दूत कह सकते हैं जैसे तुलसी राम के उपासक है, राम की हर छवि, हर कार्य से तुलसी अभिभूत है वैसे ही प्रेमचंद गाँधी के विचारों को जैसे मूर्तिमान करते हैं अपने साहित्य में। उनके साहित्य के जो भी पात्रा स्थिति परिवर्तन के लिए अग्रसर दिखाई देते हैं, उन सब में गाँधीवादी सि(ांतों जैसे साम्प्रदायिक एकता, मद्यपान निषेध, ग्राम सुधर, स्त्रियों के प्रति सम्मान जनक दृष्टिकोण, समाज के दलितजनों के प्रति सहानुभूति, अपने देश, भाषा, संस्कृति के प्रति सम्मान पूर्ण आस्था दिखाई देती है। 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', गबन आदि उपन्यासों में यह प्रभाव सापफ दिखाई देता है।

प्रेमचंद लिखते हैं फगाँधी युग ने जिस साहित्य की सृष्टि की है उसमें कर्मण्यता है, विचारों की स्वतंत्राता है, जीवन की सरलता है, निर्भीकता है और सि(ान्तों और आदर्शों के लिए बलिदान का उत्साह है। महात्मा जी ने साहित्य और कला में उपयोगिता के आदर्श पर जोर दे कर उसे भावुकता के गर्त से निकाल दिया। हमारा तो ख्याल है कि किसी वस्तु का सुंदर होना ही उसकी उपयोगिता की दलील है, अगर वह उपयोगी न होती तो सुंदर न होती और

इसलिए सत्य भी न होती।¸ (प्रेमचंद के विचार, भाग–2, पृष्ठ 268)

गाँधी जी के अठारह सूत्री कार्यक्रम में जिन सि(ांतों को स्थान दिया गया प्रेमचंद के उपन्यास उसकी पैरवी करते दिखाई देते हैं। वे वर्गभेद को बुरा मानते हैं चाहे वह आर्थिक आधर पर हो या सामाजिक आधर पर। उनका मानना है कि– बु(िवादी अपने अभिमान का त्याग कर दे, अमीर अपनी सम्पत्ति छोड़ दें, कलाकार जनता के लिए साहित्य सृजन करने लगे, प्रत्येक आदमी अपने श्रम पर जीवन–यापन करे और जीवन की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति से अध्कि की आशा न करे। ;प्रेमचंद एक विवेचन– इन्द्रनाथ मदान, पृष्ठ 86द्ध प्रेमचंद गाँधी जी के इस मत के भी समर्थक हैं कि यदि राजा अपने ध्र्म का पालन करे और रैयत का ट्रस्टी बनकर रहे तब तो वह रह सकेगा और यदि हाकिम बन कर रहेगा तो वह इस युग में नहीं रह सकेगा। इसलिए कर्मभूमि हो या प्रेमाश्रम प्रेमचंद्र अंत में ट्रस्ट बना कर सहकारिता की बात करते हैं। वे संगठन में विश्वास रखते हैं। मानवीय श्रम को महत्व देते हुए वे ऐसे यंत्रों का विरोध् करते हैं जोकि मनुष्य को ही यंत्रा बना देता है। (गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 295) उनके अनुसार औद्योगीकरण ने मनुष्य को पतन के रास्ते भी दिखाए हैं, उसे बस एक प्रतियोगी बना दिया है जहाँ उसके लिए कोई संबंध् मायने नहीं रखते वह बस गलाकाट प्रतियोगिता में ही जीना चाहता है। उनका मानना था– फ्शहरों में मनुष्य बहुत होते हैं पर मनुष्यता विरले में ही होती है। (गृहदाह कहानी – मानसरोवर भाग, भाग–6, पृष्ठ 189) प्रेमचंद्र मन से किसान हैं, देहात के हैं उनके अनुसार गाँव–सुधर ही देश की उन्नति की पहली सीढ़ि है। ग्रामों की समस्याएँ – अशिक्षा, महाजनी सभ्यता, वर्ग भेद, सूदरवोरी, अंधविश्वास और रूढ़ियाँ एक बड़े वर्ग को अपनी लपेट में लिए हुए हैं। किसानों के श्रम पर पलने वाले जमींदारों और महाजनों के वे विरोधी हैं। उनके अनुसार किसी को दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अध्किार नहीं है। वे यहाँ भी गाँधी जी के समीप दिखाई देते है। गाँधी जी अपने सभी काम स्वयं करते थे। अपने व्यक्तिगत हित के लिए वे स्वयं चरखा कातते हैं। प्रेमचंद के पात्रा भी ;अमरकान्त–कर्मभूमिद्ध यह कार्य प्रसन्नता से करते हैं।

स्त्रियों के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण भी गाँधी से प्रभावित है। वे स्त्रियों की उन्नति के प्रबल समर्थक हैं साथ ही उनकी चारित्रिक सम्मान को ठेस पहुँचाने वाले तत्वों का वे पुरजोर विरोध् करते हैं। गाँधी का मानना था कि हमारे देश में स्त्री की स्थिति गुलामों या उपेक्षितों जैसी है। कहीं वह दहेज की कमी के कारण अनमेल विवाह की शिकार है तो कहीं बाल–विध्वा के रूप में पूरा जीवन अभिशाप की तरह जीने के लिए विवश है। वेश्याओं के हृदय परिवर्तन की बात करके गाँधी जी समाज के इस आध्े भाग को सम्मानजनक जीवन स्थितियाँ देने के पक्षध्र हैं जहाँ उन्हें किसी भी दबाव या अर्थाभाव में वेश्या का जीवन जीने की आवश्यकता ही नहीं रहे। निर्मला अनमेल विवाह की त्रासदी का बहुत हृदयविदारक उदाहरण है। वहीं प्रेमा में विध्वा विवाह को प्रेमचंद ने उचित ठहराया है।

अछूत समस्या भी प्रेमचंद्र के उपन्यासों का विषय रहा है। वे इस शब्द के विरोधी हैं, उनके अनुसार समाज के सभी वर्गों का विकास ही समाज के सर्वांगीण विकास का पर्याय है। कर्मभूमि में मंदिर प्रवेश की घटना, गोदान में सिलिया का उच्च जाति के लोगों की पोल खोलना और उसके चरित्रा की दृढ़ता जैसे चित्राण द्वारा प्रेमचंद ने यह सि(करने का प्रयास किया है कि सच्चरित्राता और अन्य गुण किसी जाति की बपौती नहीं है। उनके अनुसार– फ्जो ध्र्मशास्त्रा अहंकार दंभ और उफँच–नीच का भेद सिखाते हैं, वह मान्य नहीं हो सकते। यह भेद ही ईश्वर विमुख है और हमें विश्वास नहीं आता कि

धर्मशास्त्रा कोई ऐसी व्यवस्था कर सकता है जो सर्वथा अन्याय संगत और सर्वात्मा की व्यापकता का विरोधी हो।¸ (प्रेमचंद्र के विचार, पृष्ठ 23, भाग–2)

'गोदान' तक आते–आते प्रेमचंद बहुत यथार्थवादी हो गये हैं पर महत्ता के संवाद, रायसाहब के आत्मालाप और होरी से बातचीत में तथा मातादीन के हृदय परिवर्तन में वह गाँधी दर्शन के समीप आते दिखते हैं। धनिया, मालती आदि नारी पात्रा भी गाँधी जी की उसी सोच की समर्थक है जो नारी को उच्च आदर्श और त्याग व स्नेह की प्रतिमूर्ति के रूप में ही देखती है। वहीं कर्मभूमि में सुखदा मुन्नी द्वारा दो अंग्रेजों की हत्या को सही ठहराती है– वह कहती है– 'अगर इसको पफाँसी हो गई तो मैं समझूँगी कि संसार से न्याय उठ गया... ऐसी देवी की तो प्रतिमा बना कर पूजना चाहिए। (कर्मभूमि, पृष्ठ 71)

हिंसा परमोधर्मः कहानी की इंदिरा भी यही कहती है कि इज्जत के सामने जान की परवाह नहीं करनी चाहिए। गाँधी जी ने स्वयं लिखा है– "It is my firm conviction that a fearless woman who knowns that her purity is her best shield can never be dishonoured" (Women and Social Injustice Page 183. M.K. Gandhi)

प्रेमचंद जी को विश्वास था कि अहिंसा से अहिंसा उत्पन्न होती है। इसीलिए उनका गाँधिवादी पात्रा सूरदास अहिंसक सत्याग्रह का पालन करता हुआ धर्म और न्याय की लड़ाई लड़ता है प्रेमचंद जी का सत्याग्रही मन इस तथ्य से पूर्णतः परिचित है कि अंतिम विजय सत्य और धर्म की होती है। (प्रेमचंद के जीवन दर्शन के विधयक तत्व – पृष्ठ 224, डॉ. कृष्णचंद्र पाण्डेय)

रंगभूमि के 'सूरदास' को तो आलोचकों ने गाँधी का ही प्रतिबिम्ब कहा है। 'सूरदास' की सबसे बड़ी जीत यह है कि शत्राुओं को भी उससे शत्राुता न थी। (रंगभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 566) वह अंग्रेज प्रतिनिध्यिों के प्रति भी समभाव से अनुप्राणित है। वह राजनीति करके अपना अध्किार नहीं पाना चाहता बल्कि अहिंसा और सत्य के आधर पर ही अपना संघर्ष जारी रखता है जहाँ अपने लिए वह हिंसा में विश्वास नहीं रखता पर वह कायर नहीं है बल्कि नारी सम्मान का प्रश्न आते ही वह प्रशासन और पुलिस की मदद लेने से हिचकिचाता नहीं है। गाँधी भी स्त्राी सम्मान को सर्वोपरि मानते हैं। वे अपने आत्मसम्मान और स्त्राी रक्षा के लिए हिंसा को उचित ठहराते हैं। बाल्कि सामान्यतः प्रेमचंद हिंसा के समर्थक नहीं है जूलूस कहानी में वे कहते हैं– हमें किसी से लड़ाई की जरूरत नहीं है, हमारा उद्देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है और उसकी मनोवृत्तियों को बदल देना। (जुलूस कहानी, मानसरोवर, भाग–7, पृष्ठ 53)

प्रेमचन्द्र के कायाकल्प उपन्यास की बात करें तो वह गाँधी जी की नैतिक मान्यताओं को अभिव्यक्ति देने वाला उपन्यास है। राजा विशाल सिंह चक्रध्र, मनोरमा, अहल्या आदि में ध्न और लालसा जन्म असंतोष दिखाई देता है जिसकी प्रेमचंद घोर निंदा करते हैं।

वे कायाकल्प में सांप्रदायिक सौहार्द्र की बात भी करते हैं। उनके अनुसार हिंदू या मुसलमान अच्छे बुरे नहीं है अच्छा बुरा व्यक्ति होता है जो किसी भी जाति या धर्म में हो सकता है। (कायाकल्प, प्रेमचंद्र, पृष्ठ 326)

गबन में सादा जीवन की गाँधी–सोच दिखाई देती है। जालपा का अत्यध्कि आभूषण प्रेम ही उसके जीवन की सारी समस्याओं का कारण बनता है। देवी दीन के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन की बात भी प्रेचचंद रखते हैं और अंत में जोहस का हृदय परिवर्तन तो गाँधिवादी दर्शन की मूल आस्था को ही प्रतिबिम्बित करता है।

कर्मभूमि में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, सत्याग्रह और लगानबंदी आंदोलन को प्रेमचंद ने विषय बनाया है। 'कर्मभूमि' का नायक अमरकान्त युवा है और गाँधीवादी सि(ांतों में आस्था भी रखता है पर वह बहुत सबल समर्थक नहीं बन पाता है, उसका व्यक्तिगत जीवन और आत्मिक कमजोरियाँ उसे विचलित करती रहती हैं। उसका अंतिम रूप उसकी गाँधी में आस्था से अध्कि उसके व्यक्तिगत जीवन की स्थितियों का परिणाम है। दूसरी ओर नैना, शान्ति कुमार का त्याग और लाला समरकान्त का ह्रदय परिवर्तन पिफर लेखक की गाँधीवादी मूल्यों के प्रति विश्वास को दिखाते हैं।

उनका कहना है कि दासता तथा दरिद्रता से दोनों ही महान कष्टदायक तथा अपमानजनक रोगों से रक्षा का एकमात्रा उपाय स्वदेशी को अपनाना है। (प्रेमचंद के विचार, पृष्ठ, 2009)

प्रेमचंद ने गाँधे के सि(ांतों को जैसे अपने साहित्यिक पात्राों में मूर्ति मान कर दिया है। स्वदेशी, सत्याग्रह, असहयोग, मद्यनिषेध, कृषक सुधर, स्त्राी सम्मान सभी सि(ांत अपने व्यवहारिक रूप में दिखाई देते हैं। जैसे कबीर अध्यात्म की बात करते हैं और अपने आसपास के जीवन से उदाहरण देते हुए उसे सामान्य जन के लिए सरल बना देते हैं उसी प्रकार प्रेमचंद गाँधे सि(ांतों की अपने पात्राों में प्राण–प्रतिष्ठा कर के उन्हें सजीव बना देते है और पाठक को अनुकरण के लिए एक उदाहरण देते हैं।

Copyright © 2016, Dr. Sandhya Garg. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.